"पूर्णिमा की उपयोगिता"

(यह प्रवचन पं. श्री हुजूर गृन्धमुनि नाम साहब द्वारा छपरौली - जिला मेरठ - यू. पी. में पूर्णिमा दिन दिये गयें ।)
दिनांक 20-10-83

सज्जनों एवं महिलाओं

आपके इस ग्राम में, पहली बार ही आया हूँ । यहाँ आकर, आप लोगों के दर्शन प्राप्त कर, मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । आप लोगों के दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य, मुझे महन्त श्री माधव दास जी के द्वारा ही प्राप्त हुआ । उनके स्नेह ने ही मुझे यहाँ तक लाया है, और उनका यह स्नेह आज से ही, नहीं अपितु पहले से ही, बीस पच्चीस वर्ष पहले से ही, जब वे गुजरात में थे, तब से ही उनका स्नेह, मेरे लिये बहुत अधिक था, और हमेशा ही दामाखेड़ा आया करते थे । अब तो दामाखेड़ा में रहते भी हैं । तो उनके स्नेह ने ही मुझे यहाँ तक लाया है । और आप लोगों के दर्शन से मुझे प्रसन्नता हो रही है ।

सज्जनों मेरे सभी प्रवक्ताओं ने आप लोगों के समक्ष बड़ी सुन्दर धार्मिक चर्चायें की । मैं भी चाहता हूँ कि आज के दिन पर ही, थोड़ी सी चर्चा, दो शब्द, आप लोगों के समक्ष कह दूँ ।

आज पूर्णिमा है, पूनो का दिन है, यह पूर्णिमा न केवल हमारे

लिये, कबीर पंथ अनुयायीयों के लिये, अपितु सम्मपूर्ण भारतवासियों के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण होती है । महत्वपूर्ण होने के इसके दो-तीन कारण है । एक कारण तो यह है कि, हमारे जो महाुरुष हैं, उन महापुरुषों में से दो-चार का जन्म इसी पूर्णिमा को हुआ ।

सबसे पहले तो सद्गुरु कबीर साहब का जन्म ही ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ था, इसलिये पूर्णिमा हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है । दूसरा जन्म धनी धर्मदास जी साहब का, कार्तिक पूर्णिमा मेंही हुआ था । तीसरा जन्म मुक्ता मणिनाम का अगहन पूर्णिमा में ही हुआ था ।

इसलिये इस दृष्टिकोण से यह पूर्णिमा हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण होती है । साथ ही साथ इसमें एक बात और भी है, पूर्णिमा होती है पूर्ण चन्द्र का दिन । महीनें में तीस दिन होते हैं । उनतीस दिनों तक चन्द्रमा घटता और बढ़ता रहता है, किन्तु तीसवाँ दिन जब पूर्णिमा होती है, तो नाचन्द्रमा घटता है ना बढता है । इसलिए हमारे कबीर पंथ में चौदस पूर्णिमा का ही महत्व है ।

चौदस में जब पूर्णिमा हो उस पूर्णिमा को ही स्वीकार करते हैं हम । उस पूर्णिमा को ना चन्द्रमा घटता है, ना बढ़ता है । दूसरी तिथियों में, चन्द्रमा घटता है और बढता है, इसलिये उसका महत्व नहीं ।

इसी प्रकार से हमारे जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब हम न घटते हैं न बढ़ते हैं और पूर्ण हो जाते हैं । स्थिर हो जाते हैं, वो ही हमारा पूर्णमासी का दिन, पूर्णिमा का दिन होता है । इसलिये ये दिन महत्वपूर्ण है । इसके साथ ही साथ वैज्ञानिक तथ्य भी है, चन्द्रमा का सम्बन्ध जल से अधिक होता है । पूर्णमासी, के दिन देखेंगे आप, समुद्र में अधिक ज्वार भाटा उठेगा, अधिक लहरें उठेंगी, समुद्र अधिक कम्पित होगा ।

हमारे जीवन में मूल तत्व है रक्त खून ही । जीवन है, और इस

खून में 90 प्रतीशत जल का अंश है इसलिए होता क्या है, कि जब पूर्णिमा का दिन होता है, तो हमारे मन में अधिक चचंलता उत्पन्न होती है । आप लोग ये सोचते होंगे कि पूर्णिमा का दिन अच्छा होता है, इसलिए ये महत्वपूर्ण है, इसलिये हम मानते है, इसलिये हम स्वीकार करते है, ऐसा बात नहीं है । पूर्णिमा के दिन अधिक हम उद्वेगवान होते हैं, हम में अधिक उद्वेगता आती है । हमारा मन अधिक चंचल होता है, इसलिये उस चंचलता को शान्त करने के लिये ही पूर्णिमा को हम ग्रहण करते हैं, और पूर्णिमा के दिन जो नियम बनाये गये हैं वा मन को शान्त करने के लिये ही बनाये गये हैं ।

आज पूर्णिमा है, आप लोगों ने देखा होगा, आप लोग ने उपवास किया होगा, आप लोग सुबह से उपवास रहे होंगे कि भाई, आज पूर्णिमा है और भोजन नहीं, करना है । तो सच पूछिये तो आज आप लोगों ने उपवास तो किया, लेकिन ये उपवास, उपवास नहीं है, इसको उपवास नहीं कहा जाता तो हम लोगों ने किया, हम भोजन ना करें, तो उपवास, उपवास नहीं कहलाता, हम भोजन ना करें तो वे अनशन कहलायेगा, हम अन्न ग्रहण नहीं करते इसलिये अनशन नहीं कहलायेगा ? कि उपवास कहलायेगा, उपवास नहीं कहलायेगा, ये तो अनशन है, हम भोजन नहीं करते इसलिए अनशन है, और एक बात देखेंगे कि जिसका आप प्रतिरोध करते हैं जिसे आप कहते हैं कि हम आज नहीं करेंगे, आज हम छोड़ देंगे, उस दिन आपका मन, आपकी रूचि, आपका लगाव, अधिक उस ओर होगा । जिस दिन आप चाय छोडेंगे, चाय तो रोज पीते हैं, आप कोई बड़ी बात नहीं होती लेकिन जब आप ये सोचेंगे कि आज मुझे चाय छोड़ देनी है, चाय नहीं पीनी है, तब होता क्या है ? उस दिन सुबह से ही आप को चाय की याद आती है । यहाँ तक की आती है कि कब मुझे एक कप चाय मिल जाये, और यहाँ तक की भण्डार घर में रसोई घर में कप वसी की आवाज भी सुनायी देने लगती है । उस प्रकार से जब पूर्णिमा का दिन आता है और हम ये सोच लेते हैं कि भई कल तो पूर्णिमा है । और सुबह से ही पूर्णिमा का

व्रत होगा । और हमें तो भोजन मिलेगा नहीं, तो उस दिन आपको भूख लगनी शुरू हो जायेगी । यदि आप रोज़ भोजन करते होंगे तो चिन्ता नहीं होगी कि आज भोजन करना है, क्योंकि वो स्वभाविक है भोजन तो आपको करना ही है, इसलिए आपका मन उस ओर नहीं जायेगा, भोजन करेंगे या नहीं, लेकिन आज जब पूर्णिमा है, सुबह से ही आपके मन में ये बात बैठ गयी होगी कि आज पूर्णिमा है, उपवास रहना है, उपवास रहना है, व्रत रहना है, भोजन नहीं करना है तो जैसे ही आप बिस्तर से उठे, और भूख लगी आप को, आप पूरे बाजार में घूम जायेंगे तो कपड़े की दुकान है, और भी सामान की दुकाने हैं, तो वो आपको दिखलायी नहीं देगीं, लेकिन अगर कोई हलवाई की दुकान आ जाये, तो जरूर दिख पड़ेगी, क्योंकि मन आपका लगा हुआ है ना, कि भूख कैसे मिटाये, भाई चावल ना खाये, रोटी ना खाये, नमक ना खाये मिर्ची न खायें, लेकिन एक किलो मिठाई खाने में क्या आपत्ति है, तो भूख तो मिटानी है, तो एक बहाना चाहिये ना । मन को तो बहाना चाहिये, कि हम उपवास भी रह जायें और हमारा पेट भर जायें । भूख भी ना लगे, फिर हमने एक उपाय सोचा, कि कोई बात नहीं, भई रोटी को रहने दो घर में, चावल को भी रहने दो घरमें, नमक मिर्च को भी रहने दो, तो बाजार से एक किलो मिठाई ही ले आयें । या दो-चार किलो सेब ले आओ, केला ले आओ पेट तो भर लो, तो ये उपवास नहीं होता, उपवास इसको नहीं कहेंगे । ये तो एक ना भी करो आप, ना ही फल खाओ ना ही मिठाई खाओ आप, कुछ भी ना खाओ, जल भी ना पीओ तो ये तो आपका अनशन हो गया ।

उपवास का सीधा-साधा अर्थ है "उप" होता है 'छोटा' और "वास" कहते है बैठने को । थोडी देर के लिए, कुछ समय के लिए बैठ जाओ आप । कहाँ बैठ जाओ ? जहाँ आपको शान्ति मिल सके, जहाँ आपका मन शान्त हो सके, वहाँ बैठ जाओ । तो जगह कहाँ है बैठने की, एक तो सद्गुरु की शरण में जाकर बैठ जाओ, गुरु के

पास जाकर बैठ जाओ, तो आपको शान्ती मिलेगी, या भजन में बैठ जाओ, तो आपको शान्ति मिलेगी, आपको आनन्द मिलेगा, आपको अच्छा लगेगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो, आपको आनन्द मिलेगा, आपको अच्छा लगेगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो, आपको भला कैसे, आपका उपवास, उपवास होगा । उपवास का मतलब ही यह है कि कुछ समय के लिए, थोडी देर के लिए बैठ जाओ आप तो कहाँ बैठो ?जहाँ आपको शान्ति मिलनी है, उपवास का मतलब यह नहीं होता कि भोजन मत खाओ, ऐसा नहीं, इससे तो अनर्थ हो जायेगा, फिर उपवास का मतलब केवल जीभ के स्वाद से तो नहीं, आप खट्टा ना खाओ, मीठा ना खाओ, चरपरा ना खाओ, ये स्वाद केवल जीभ का ही स्वाद हुआना, केवल एक इन्द्री का ही स्वाद है । साहब ने तो कहा है –

"पाँच स्वाद की इच्छा नाँही ।"

पाँचों की इच्छा नहीं होनी चाहिये । पाँच स्वाद तो ये तो केवल जीभ के ही स्वाद है । फिर कान का भी तो स्वाद होता है ना, कि नहीं होता ? नाक का स्वाद होता है कि नहीं होता ? तो ये जो पाँच ज्ञानेन्द्रियों का जो स्वाद लेते हैं आप मान लो जीभ का स्वाद नहीं लिया, भोजन नहीं किया आपने, क्या आँखों से देखना बन्द कर देते हैं, आँखों से तो सारी दुनियाँ को देखते ही हैं, दुनियाँ के राग रंग को तो देखते ही हैं, कानों से दुनियाँ की बातें तो सुनते ही है आप, । नाक से तो सुगन्ध लेते ही हैं आप । और शरीर से आप स्पर्श तो करते ही हैं, आप । तो फिर उपवास कैसे हुआ ? उपवास का मतलब तो नहीं हुआ ना ये सारी चीजों से आप दूर हो जाओ, जब

"पाँच स्वाद की इच्छा नाही" ।

पाँचो ज्ञानेन्द्रियों के स्वाद की इच्छा ना हो आप में । तब तो वो उपवास, उपवास होगा । आप कुछ भी ना सुनना चाहे, आप कुछ भी देखना ना चाहे, आप स्पर्श करना ना चाहे, ये जब कुछ भी ना

चाहे, जब ऐसी घड़ी आयेगी, तब आप उपवास कर पायेंगे । तो ऐसी घड़ी आयेगी, कब जब आप में शून्यता आयेगी । शून्यता कब आयेगी ? जब आपअपने आप में बैठ पायेंगे । जब आप सद्गुरु की शरण में बैठ पायेंगे । जब आप अपनी आत्मा के पास बैठ पायेंगे तब तो बिना आत्मा के पास बैठे बिना सद्गुरु के पास बैठे; तो कभी शून्यता आयेगी नहीं आपके जीवन में, और जब तक शून्यता नहीं आयेगी तो उपद्रव तो होता ही रहेगा । आप भोजन न करो तो उससे फर्क नहीं होगा बल्कि आपका मन और चंचल होगा । तो मैं तो कहूँगा कि जिस दिन पूनों हो, उस दिन खुब खालो आप, सुबह से खाना शुरु करो आप, और रात तक खाते रहो । ताकि आपका मन तो शान्त रहे ना । उससे तो अशान्त होता है । तो मूल बात है आपका मन शान्त और, जब मन शान्त होता है तो सारी इन्द्रियाँ शान्त हो जाती है जब सारी इन्द्रिया शान्त हो जाती है तो सारी वासनायें शान्त हो जाती है । जब सारी वासनायें शान्त हो जाती है तो आप स्वतः शान्त हो जाते हैं । जैसे एक झील होती है, झील जब शान्त हो जाती है, तो वो झील, झील होती है, तब वो समुन्द्र, समुन्द्र होता है । जैसे मैं आपको पूछ बैठूँ कि आपने समुद्र देखा है तो आप कहदे कि हाँ हमने तो समुन्द्र देखा है । लेकिन आपने समुन्द्र देखा नहीं है आपने समुन्द्र में उठती हुयी लहरों को देखा है, लेकिन जब लहरे शान्त हो जाये, स्थिर हो जाये और फिर जो रूप समुन्द्र का होगावो समुन्द्र होगा । आज नहीं, आज आप जो देख रहे है वो समुन्द्र की लहरे हैं, लहरें उठ रही है, मिट रही और फिर उठ रही है । यह समुन्द्र नहीं है, ये तो लहरों का रूप है । लेकिन जब लहरे शान्त हो जाये बिल्कुल कोई लहर ना हो, कोई कम्पन्न ना हो, फिर आप जब देखेंगे वो समुन्द्र का रूप होगा । उसी प्रकार हमारे जीवन में ना जब कोई कम्पन्न हो, ना कोई लहर हो, ना कोई वासना हो, कम्पन्न होता कैसे है ? मैं आपको बता दूँ । साहब कबीर कहते है –

चलते चलते पग थका, नगर रहा नौ कोस ।
बीच ही में डेरा पड़ा, कहो कौन का दोष ।।

हम आये अनन्त के राही, अतीत काल से चलते जा रहे हैं चलते जा रहे हैं, .चलते जा रहें हैं, चलते जा रहे हैं लेकिन आज तक हमें मंजिल मिली नहीं । मंजिल थोड़ी दूर रह जाती है और हम विश्राम कर लेते हैं, और फिर मंजिल से भटक जाते हैं । इस प्रकार से अनन्त जन्म बीत गये लेकिन, हम अपनी मंजिल में नहीं पहुँच पाये । इस प्रकार से अनन्त जन्म बीत गये लेकिन, हम अपनी मंजिल में नहीं पहुँच पाये । तो साहब कबीर कहते हैं कि भाई ! इसमें दोष किसका है, त्रुटि किसकी है, मंजिल की या राही की ? तो त्रुटि हमेशा राही की होती है, मंजिल की तो नहीं होती । राही अगर चल ना सके तो गलती तो राही की है, चलने वाले की है । मंजिल की क्या गलती है, तो इस तरह से हम अनन्त जन्मों से चलते जा रहे हैं, चलते जा रहे हैं, चलते जा रहे हैं, लेकिन, हम अपनी मंजिल में नहीं पहुँच पाते । और फिर हमारा जन्म हो जाता है ।

हमारी मंजिल है सत्तलोक, हमारी मंजिल है सत्यनाम, हमारी मंजिल है वह लोक, जहाँ हमें पहुँचना है । तो उस मंजिल में नहीं पहुँच पाते, और रह जाते हैं । यही, यही पड़ाव हो जाता है । और फिर हम भाग जाते हैं । इसलिये साहब ने कहा है कि भई "चलते-चलते पग थका नगर रहा नौ कोस" तो हम चलते जा रहे हैं, चलते जा रहे हैं, चलते जा रहे हैं । और थकान मिटाने के लिए लेट जाते हैं विश्राम कर लेते हैं । और जो नगर है, जहाँ हमें पहुँचना है उसकी दूरी नौ मील रह जाती है । तो नौ का तात्पर्य है, नौ इन्द्रियों से, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और चार श्रवणेन्द्रियाँ । ये पाँच चार नौ इन्द्रियाँ हो जाती है । तो इन नौ इन्द्रियों को हम शमन नहीं कर पाते । हम उनको दमन नहीं कर पाते । इसलिए हम अपनी मंजिल में नहीं पहुँच पाते । जिस घड़ी जिस क्षण, जिस दिन, जिस समय में यदि हम अपनी इन्द्रियों को शमन

कर ले, हम दमन कर लें उसको अन्तर्मुखी कर लेंतो समझो कि हम अपनी मंजिल बड़ी दूर रह जाती है । तो उसको शमन करना है । पाँच ज्ञानेन्द्रियों को और चार श्रवणेन्द्रियों को, जब ये सब कुछ शमन हो जाये, उसी को हम कहते हैं शून्यता ।उसी को हम कहते हैं मोक्ष । जैसे बुद्ध जी ने कहा ना निर्वाण । निर्वाण का तात्पर्य होता है बुझ जाना । तो बुझता है, जैसे दीपक नहीं होता ? दीपक बुझता है, तो दीपक दो प्रकार से बुझता है । दीपक में तेल भी होता है और बत्ती भी होती है एक पवन का झोका आया । और दीपक बुझ जाता है । दीपक दूसरी प्रकार से बुझता है । जब, जलते-जलते उसकी बत्ती समाप्त हो जाती है, और तेल भी समाप्त हो जाता है, और दीपक शान्त हो जाता है इस प्रकार से दीपक बुझ जाता है ।

तो हमारा जो दीपक बुझता है, वो उसी प्रकार से बुझता है, जिस प्रकार से दीपक में तेल है और बत्ती है और एक पवन का झोका आया और बुझ जाता है । तो ऐसे दीपक को आप फिर से जला सकते है । जलता है कि नहीं दीपक ? जब उसमें तेल है, बत्ती है और माचिस लगा दो, तो वो दीपक जल जायेगा । लेकिन जिस दीपक में न तेल है न बत्ती है, दोनों जलकर समाप्त हो गये हैं उसको आप कैसे जलायेंगे । जलने का कोई तरीका नहीं । जलेगा ही नहीं दीपक । तो उसी प्रकार से जब हमारे अन्दर ना कोई वासना हो, ना कोई इच्छा हो, ना कोई आकांक्षा हो, जब इस प्रकार कुछ भी ना हो, और जब हम शान्त हो जाते हैं, तब दीपक का बुझना होता है । उसको बुद्ध जी ने कहा कि निर्वाण । उसको हम लोगों ने कहा मोक्ष । साहब कबीर ने कहा कि भई उन्नमुनि रहनी । उन्नमुनि रहनी का मतलब यह है कि जहाँ मन ही ना हो, अमन हो, जहाँ मन की पहुँच ना हो । मतलब यह है कि जहाँ मन शान्त हो जाये । उस स्थिति पर उस गनतव्य पर जब आप पहुँच जाओ, तब ये आपका पूर्णिमा व्रत सफल होगा । अन्यथा नहीं । आप नहीं खायेंगे तो पूर्णिमा का व्रत सफल नहीं होगा, या कुछ भी करेंगे तो पूर्णिमा का व्रत सफल

नहीं होने वाला है । जब आप उस स्थिति पर पहुचेंगे, जब आपके जीवन में कुछ भी ना हो, ना जब आप कुछ भी सुने, ना कुछ भी सुंघे, ना कुछ भी स्पर्श करे । जब बिल्कुल शान्त जैसे एक झील शान्त होती है, वैसे ही आपका जीवन परमछिन शान्त हो । कोई लहर ना हो, कोई कम्पन्न ना हो । तब समझो कि आप, पूनों का ये जो व्रत है वो सफल होता है । तो पूनो के लिये ये व्रत करना आवश्यक होता है । लेकिन हम हमेशा दूसरा ढंग अपनाते हैं, नहीं खाते, नहीं पीते, नहीं कुछ करते और इसके साथ-साथ होता क्या है, एक और भी करते हैं हम पूनों के दिन कि भाई हम जागरण भी करते हैं रात में जागते है, तो जागने के तरीके भी हमारे बहुत से भिन्न-भिन्न हैं ।

हम ये सोच लेते हैं कि भाई पूनों के दिन है, हमें जागरण करना है, तो क्या तरीका है । तो एक ही तरीका है । चलो किसी सनीमा घर में बैठ जायें, तो रात व्यतीत हो जायेगी । तो ये जागना कोई जागना तो नहीं हुआ ना ? ये तो और भी उटपंटाग हो गया । इससे अच्छा तो होता कि आप सो जाते, सात ही बजे सो जाते, लेकिन वो आप सिनेमा में जायेंगे । और रात भर बैठेंगे और सिनेमा देखेंगे । तो वो तो और गलत बात हो गयी तो वो जागना कोई जागना नहीं है । उससे अच्छा तो आप सो जाओ, शाम हुयी और सो जाओ वो ज्यादा लाभदायक होगा आपके जीवन में ।

तो जागने का तात्पर्य यह है कि अपने होश से भर जाना । आज होश सें भरे हुये नहीं है हम, हम तो सोच रहे हैं कि हम जागे हुये व्यक्ति हैं । लेकिन हममें जागरण नहीं आया अभी तक । हम एक सोये हुये व्यक्ति हैं । और सोये हुये व्यक्ति को, जैसे एक व्यक्ति सो जाये खाट में या बिस्तर में तो उसको आप गीता सुनाते रहो, भागवत सुनाते रहो वेद मन्त्रों का पाठ करते रहो, ग्रन्थ सुनाते रहो, भला क्या समझेगा वो । कोई समझेगा वो ? क्या समझेगा वो, जो सोया हुआ आदमी है इस प्रकार से हम सोये हुये व्यक्ति हैं । ये मत सोचो की हम जागे हुये हैं, और हमको रात दिन ग्रन्थ सुनाया जा रहा है, भजन

सुनाया जा रहा है, तो हम पर असर क्या होगा ? कुछ भी नहीं होगा । अगर हम जाग गये होते तो फिर ये ना ग्रन्थ सुनाने की जरूरत होती, ना गीता सुनाने की जरूरत होती ना कोई ग्रन्थ सुनाने की जरूरत होती । हम जाग गये मतलब, सब कुछ पा गये, और नहीं जागे तो कुछ भी सुनाते रहो, हमारे कोई महत्व की बात नहीं हुयी । तो जागने का तात्पर्य ये होता है कि अपने होश से भर जाओ । जब आप अपने होश से भर जाओगे, जब आपके अन्दर से बेहोशी दूर हो जायेगी । तब आप समझेंगे की आपके अन्दर जागरण आया और जागृत होना ही साहब सत्य की उपलब्धि है । जागृत होना ही सत्य ही उपलब्धि है जागृत होना ही साहब को पाना है । यदि आप जागे नहीं तो साहब को पाओगे कैसे ? इसलिये धनी धर्मदास जी साहब कहते हैं, बहुत सुन्दर पद है उनका कि –

सुतल रहियो सखियो, तो विष के आगर हों ।
सतगुरु दियलो जगाय, तो पाये सुख सागर हो ।।

धनी धर्मदास जी साहब कहते हैं 'सुतल रहियो' जब में सो रहा था, तो चारों तरफ विष ही विष था । धर्मदास जी साहब कैसे थे, पहले सनातन धर्म थे ना । आपको मालुम है कि नहीं, या बताना पड़ेगा मुझे । धनी धर्मदास जी साहब सनातन धर्मी थे, उनके यहाँ बहुत से पण्डित थे पुरोहित थे, और शालीग्राम की पूजा करते थे वो । उनके पास धन था, समपत्ति थी इसलिये जागरण भी करते थे और जब तीर्थ यात्रा में गये थे तभी साहब कबीर की भेंट हुई थी उनकी मथुरा में और जब साहब कबीर से भेंट हुयी, तभी तो साहब कबीर ने उनको झकझोरा था, तभी तो साहब कबीर ने उनको ज्ञान दिया था, तभी तो साहब कबीर ने उनको समझाया था । तो जो सद्गुरु होते हैं, वो शिष्यों को झकझोर देते हैं । एक धक्का देते हैं । एक बिजली का शॉट लगता है ना, आप बिजली जैसे विद्युत को छू दो आप और शॉट लगेगा, वैसे ही सद्गुरु आप को एक शॉट दे देते हैं । आप सद्गुरु के पास जाओगे, तो ये थोड़ी पूछेंगे कि तुमने चाय पी है कि नहीं ? ऐसा कोई

सद्गुरु नहीं पूछेगा, अगर पूछता है तो समझो कि वो सद्गुरु नहीं है । सद्गुरु कोई नहीं पूछेगा कि तुम्हारा व्यापार ठीक चलता है कि नहीं चलता । तुम्हारे बाल-बच्चे ठीक है कि नहीं है । तुम्हारी नौकरी ठीक है या नहीं । तुम नौकरी कर रहे हो या नहीं कर रहे हो ? ये सद्गुरु नहीं पूछेगा । ये तो भाई बन्धु पूछेंगे तुम्हारे इष्ट मित्र पूछेंगे तुम्हारे कि नौकरी ठीक है कि नहीं । तुम्हारे बाल बच्चे ठीक है कि नहीं । ये सद्गुरु नहीं पछूंगे, सद्गुरु तो तुम्हारी आँखों में उँगली डाल कर पूछेंगे कि अब भी तुम उसी दासता में पड़ हो ? अरे ! अब भी तुम उसी बन्धन में पड़े हो । अरे भाई ! अनके जन्म तो तुमने उसी दासता में गुमा दिये, अनेक जन्म तो तुमने उसी बन्धन में गुमा दिये, और आज फिर भी उसकी गुलामी कर रहे हो । तो तुम जागोगे कब ? मुक्त कब होंगे ? तो यही बात साहब कबीर ने धनी धर्मदास जी साहब को बतलायी, जब बतलायी तो धनी धर्मदास जी साहब को एक शॉट लगा । ये अच्छी थोड़ी लगनी थी बात, नहीं लगी । अच्छी बात नहीं लगी, एक शॉट लगा और धर्मदास जी साहब तिलमिला गये, उनकी वाणी को समा नहीं सके । उनके शब्दों को समा नहीं सके, और तुरन्त बाँधो गढ़ भग गये । रूके नहीं वो, चले गये, बाँधोगढ लेकिन एक बात होती है जब सद्गुरु से आँख लग जाती हैं, तो बिना सद्गुरु के बिना रहा भी नहीं जाता । तो धर्मदास जी साहब को कहाँ चैन, कहाँ उनको आराम । ना उनको दिन में चैन, ना रात में नींद, कुछ नहीं एक व्याकुलता उनके अन्दर जगने लगी, और फिर दौड़े, वो तो भेंट हुई, जब काशी में । जब काशी में हुई तो, उस समय धर्मदास जी साहब की हालत दूसरी थी । तब वो समझ गये थे कि कबीर कौन है उनका ज्ञान कौन और क्या है ? वो अपने अन्दर से जाग गये थे । तो सद्गुरु करते क्या हैं ? एक धक्का देते हैं, जगा देते हैं, इसलिये धर्मदास जी साहब कहते क्या हैं :–

सद्गुरु दियलो जगाय, पाय सुखसागर हो ।

जब मैं सो रहा था, जब मैं भर्म में था, तो चारों तरफ जहर

ही जहर था, विष ही विष था, लेकिन जब सद्गुरु ने आकर जगाया, तब पाय सुखसागर हो" ।

तो मुझे सुख का सागर ही मिल गया । जैसे आप हैं नहीं, आप अपने में सोए हैं । सूर्य का प्रकाश आपके कमरे में आ गया है, आपके अन्दर आ गया है, आपकी चादर में प्रकाश में पड़ रहा है, और आँखे मूँदे सोए रहे, आप सोचे कि अभी रात ही है, अरे भाई ! दिन है, अब आँख बन्द करो तो रात लगती है ना । लेकिन आपके आँख बन्द करने से दिन रात में तो परणित नहीं हो जायेगा ।

तो सद्गुरु क्या करते हैं कि आपने जो चादर ओढ़ी है, उस चादरको झटकार देते हैं कि उठो तो सही । तुम अभी तक सोए हो, सूर्योदय हो चुका है, प्रकाश तुम्हारे सामने है और तुम सोए हो । तो सद्गुरु का काम है कि एक झटका देते है, जो तुम चादर ओढ़े हो उस चादर को उठा देते हैं, जब चादर खींच जाती है, तब तुम्हारी आँखे खुल जाती है । जब आँखे खुलती है, तब क्या होता है ? कि चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश है । कहाँ नही है प्रकाश ? प्रकाश तो सब जगह है । केवल तुम सोये हो, इसलिये प्रकाश मालुम नहीं पड़ता । तुम जिस दिन जग जाओगे, उस दिन प्रकाश कहाँ नहीं है ? चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश है ।

हममें आप में, अणु में परमाणु में सब जगह तो है, और उसी प्रकाश को तो साहब ने कहा कि भाई परमामा सब जगह है ।

सब घट मेरा साँइया, सूनी सेज ना कोय ।
बलिहारी वा घट की जा घट परगट होय ।।

साहब ने कहा की भई ! तुम परमात्मा को ढूँढते कहाँ हो ? परमात्मा तो सब जगह है, आप में है, अणु में, परमाणु में है । और उस परमात्मा को तुम ढुढ़ँते चले जा रहे हो, ढूँढते चले जा रहे हो, और इस प्रकार से ढूँढते चले जा रहे हो, कि तुम कभी नहीं

पाओगे । जैसे यह मन्दिर है नहीं, मन्दिर के सामने खड़े हो जाओ, और मन्दिर की तरफ पीठ कर लो, आप उधर गेट है, गेट की तरफ अपना मुँह कर लो आप, औरचलो खोजते मन्दिर कहाँ है ? मन्दिर कहाँ है ? परमात्मा कहाँ है ? साहब कहाँ है ? कोई पाओगे क्या साहब को ? पूरा छपरौली क्या, पूरी दुनियाँ घूम जाओ, आप । साहब मिलने वाले हैं ? नहीं मिलने वाले बस ये आप पीठ किये खड़े हो, थोड़ा पलट जाओ, आपके पलटने की देरी है आपकी जहाँ पीठ हो वहाँ अपना चेहराकर लो आप । जहाँ चेहरा किये कि साहब आपके सामने । लेकिन चेहरा तो करते नहीं हो आप, अपने आप को पलट तो सकते नहीं आप । और चले दुनियाँ में खोजते कि साहब कहाँ है ? परमात्मा कहाँ है ? कभी पत्थर में तो कभी मन्दिर में, तो कभी मज्जिद में, तो कभी गुरुद्वारे में, कभी चर्च में, सारा जीवन क्या अनन्त जीवन तुम्हारा भटक जाता है, लेकिन परमात्मा मिला नहीं । परमात्मा मिलेगा कब ? कि थोड़ा पलट दो अपने आपको, जहाँ पलटे कि परमात्मा आपको मिला ।

तो सद्गुरु करते क्या हैं, अपने आप को पलटा देते हैं, जिसको पलटा देते है, उसी बात को कहते हैं कि 'सद्गुरु दिय लो जगाय' धनीधर्मदास जी साहब कहते हैं :-

"सद्गुरु दियलो जगाय, तो पाय सुखसागर हो ।"

जब मैं जग गया तो सुख का सागर मिल गया । सागर सुख का सागर दूर थोड़ी है, सुख का सागर मैं तो हूँ ही, लेकिन सोया था । इसलिये मुझे पतानहीं चल रहा था, लेकिन जब जग गया तो, सुख का सागर ही मिल गया यह संसार कोई दुखः का सागर थोडी है । हमारे धर्माचार्यों ने तो कहाँ कि यह संसार दुखः है, इसको छोडो तो छोड़ के जाओगे कहाँ, संसार को ? छोड़ना कुछ भी नहीं है यहाँ तो पाना है, जिस दिन पा जाओगे आप, सब कुछ छूटता जायेगा, और बिना पाये छोड़ते हो, तो आप, तो छटता भी है और पाते भी नहीं हों आप,

तो आप पलट जाओ, तो सब कुछ मिल जायेगा, और बात बन जायेगी ।

आगे धनी धर्मदास जी साहब कहते हैं कि :-

"जब रहिये जननी के उदर, तो परम समानन्द होय ।"

जब मैं अपनी जननी के उदर में था, गर्भ में था, तब रक्षा करने वाले आप ही थे, और अब मेरा जन्म हुआ, मेरे अन्दर प्राण फूँके गये, मेरे अन्दर प्राण आये, तो मैं इस स्थिति में हूँ कि जीवन पर्यन्त मैं तुमको भूलुंगा नहीं ।

"जब लग तन में प्राण, तोहि ना विसराये हो ।"

बहुत सुन्दर बात कहते हैं । धनी धर्मदास जी साहब कहते हैं कि जब मैं जननी के उदर में था, तो आपने ही रक्षा की थी । बहुत से लोग क्या कहते हैं कि भई ! आप लोग माँ के गर्भ में रहते हो नहीं, तो बहुत से लोग कहते हैं धर्माचार्य लोग या धर्मगुरु लोग कि तुम कहाँ नरक में पड़े रहते हो, कहते हो कि नहीं कहते ? आप ने सुनी नहीं, तो आप लोग भी कहते होंगे कि बच्चा जब माँ के गर्भ में रहता है । तो नरक में पड़ा रहता है, कहते हो नहीं ? बड़ी गलत बात कहते हो, गलत बात नहीं कहते हो आप, कि सही बात कहते हो ? गलत कहते हो आप । जब आप कहते हो, कि माँ के पेट में बच्चा रहता है तो नरक में रहता है । कितनी बड़ी गलत बात कहते हो आप । अरे! ना तो वहाँ मूत्र की नली है, नामल की नली है, ना कुछ की नली है । अरे! गर्भाशय तो सबसे उत्तम है । और इतना आरामदायक जगह है कि संसार में कहीं नहीं पायेंगे आप । ना कहीं सोफा-सेट पायेंगे, ना तकियापायेंगे, ना गद्दा पायेंगे, इतना आरामदायक जगह है, फिर भी आप निन्दा करते हो मां के गर्भ की, कि वो नर्क है, अरे ! वही स्वर्ग है, लेकिन जब आप माँ के गर्भ से बाहर आते हो, संसार में आते हो, वासना जागती है, तब आप नर्क

में होते हो, और जब माँ के गर्भ में हो, तब स्वर्ग में हो । लेकिन धर्मगुरुओं ने हमें सब उल्टी बात बतायी ।

जब माँ के गर्भ में हो तो मूत्र की नली और दुनियाँ की नली, और तुम कहाँ पड़े ? अरे पड़े जहाँ सुरक्षित हो वहाँ । दुनियाँ की कोई आरामदायक जगह नहीं है, लेकिन बिना सोचे विचारे हम धर्मगुरु लोग कहे जाते हैं । वैसे ही कह जाते हैं लोग । तो धनी धर्मदास जी साहब कहते हैं । कि जब मैं गर्भ में था, तो तुमने मेरी रक्षा की और जब मेरा जन्म हुआ, तो मैं इस स्थिति में आ गया हूँ कि मैं तुम्हें नहीं भुलाऊँगा । जीवन-पर्यन्त मैं तुम्हें भूलूँगा नहीं । कितनी बात कहते हैं कि तुमने मुझे जन्म दिया, और मैं तुम्हें भूल जाऊँ । एक बात मैं आपको बताऊँ जैसे मैं आपको दस रूपया लाकर दे दूँ । दस रूपया को आप रख लो मुठ्ठी में और उसको चुपचाप रख लो । दस रूपया को तो रख लो आप, और मैंने जो आपको दस रूपये दिये मुझे भूल जाओ आप । देने वाले को तो भूल जाओ, जिसने दस रूपये दिये, उसको आप भूल जाओ, और उस दस रूपये को पकड़ के रख लो आप । तो क्या कहेंगे आप ऐसे लोगों को ? क्या कहा जायेगा ? बोलो ना, स्वार्थी ! स्वार्थी कहेंगे , बड़ा बेइमान कहेंगे । नहीं कहेंगे बेइमान ? कि दस रूपया को तो पकड़ के रख लो आप, और दस रूपया देने वाले को भूल जाओ आप, कितने बड़े बेइमान लोग हैं । है नहीं, तो हमको जिसने जीवन दिया, जिसने हमें सुख दिया, जिसने हमें सम्पत्ति दी, जिसने हमें वैभव दिया । जिसने हमें सारा ऐश्वर्य दिया, जिसने हमें जन्म दिया, उस परमात्मा को तो भूल गये, और हमने सारे ऐश्वर्य को पकड़ लिया, सम्पत्ति पकड़ ली, माता-पिता पकड़ लिया सब कुछ को तो पकड़ लिया और जिसने दिया, उसको हम भूल गये, है नही ? ऐसा ही करते हो ना ? आप अपनी पत्नी के पीछे लगे हो ? कि भाई बन्धु के पीछे लगे हो ? कि गाँव के पीछे लगे हो ? कि धन के पीछे लगे हो ? सम्पत्ति के पीछे लगे हो, परमात्मा के पीछे लगते हो कभी ? अरे । जीवन में कभी एक मिनट भी नाम नहीं

लेते कि परमात्मा कभी है । जिसने दिया, उसको तो तुम भूल गये, और जो है, उसको पकड़ के रख लिया । तो हम कितने बेइमान लोग है सोचो आप । जिसने हमें जीवन दिया, धन दिया, ऐश्वर्य दिया, सब कुछ दिया, उसको तो हम भूल गये, और सब कुछ को पकड़ के रख लिया ।' बड़ी गलत बात हो गयी । इसलिये साहब ने कहा –

"मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौपते, क्या लागत है मोर ।।"

"मेरा मुझ में कुछ नहीं"

अरे ! मेरा क्याहै इसमें ! मैं लाया क्या था अपने साथ, कुछ भी तो नहीं । जब आया था तो कम से कम मुठ्ठी बाँधे तो आया था । अब जा रहा हूँ, तो हाथ पसारे जा रहा हूँ । सिकन्दर को जानते हो ना, सिकन्दर महान को, जब उसकीअर्थी निकली, तो उसने अपने सेनापति से कह दिया था कि देखो ! मेरी जब अर्थी निकले, शहर में, तो मेरे एक हाथ में लटका देना बाहर, तो सिकन्दर का एक हाथ लटका दिया था । उसकी अर्थी निकली, उसकी शव यात्रा निकली, लोग देखने लगे, कि भाई एक हाथ लटका है, इसे बन्द क्यों नहीं कर देते ? तो सेनापति ने कहा कि भाई सम्राट की आज्ञा है, हम कैसे बन्द कर दें ।

असली में सिकन्दर ये उपदेश देके चला गया । उसके पीछे एक उद्देश्य था, कि देखो मैं आया इस संसार में, और सारे संसार को विजय किया । फिर जब आज संसार से जा रहा रहा हूँ मैं, विदा हो रहा हूँ, तो मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, ना खजाना नहीं, ना पत्नी नहीं, धन नहीं, ना समाप्ति नहीं, आया था तो कम से कम मुट्ठी बाँध के भी आया था । कुछ कर्मों का फल लेके भी आया था, लेकिन आज जा रहा हूँ तो खुले हाथ जा रहा हूँ । तो सब सम्राट सिकन्दर जब खुले हाथ जा सकता है, तो हमारे यहाँ से कौन ले के जायेगा । क्या लेके जायेंगे । कुछ भी नहीं, ऐसी बात पक्की हो तो चलो, ले चले,

लेकिन ऐसी तो कोई बात पक्की नहीं है, इसलिये साहब कहते हैं –

"मेरा मुझ में कुछ नाही, जो कुछ है सो तोर"

मेरातो मुझमे है ही नहीं, मेरे में है क्या ? अरे भाई ! मैं स्वास लेता हूँ, तो स्वास भी तो तेरी है, तेरी कृपा से ही तो मैं स्वास ले पाता हूँ, तू है तभी तो मेरा जीवन है । अगर तू ही ना रहे तो, मैं जीवित रहूँगा कैसे ? जीवित ही नहीं रह सकेगा । तो साहब कहते हैं –

"मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर" और तेरा तुझको सौंपता, और तेरी चीजों को, तेरी सामग्री को, तेरा तुझको सौंपकर, मेरा बिगड़ता ही क्या है ? मेरा तो मुझमें है ही नहीं कुछ, जो कुछ है, सो तेरे में, समर्पण है । दादू साहब और भी कहते है, दादू साहब कहते हैं –

"तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा पिण्ड और प्राण ।
सब कुछ तेरा पर तू, तू है मेरा ये दादू का ज्ञान ।।"

दादू साहब कहते हैं कि "तन भी तेरा और मन भी तेरा, तेरा पिण्ड और प्राण, सब कुछ तेरा प्रभु ! पर शर्त एक है कि तू है मेरा । सब कुछ तो तेरा है, पर तू मेरा है । ये दादू का ज्ञान । जब ये बात हमारे अन्दर में जगी जब ये भावना हमारे अन्दर जगी, तब तो हम कहेंगे कि हमारे अन्दर भक्ति जगी । या बातें ही बातों से भक्ति जगेगी ? बातों, बातों से तो भक्ति जगने वाली नहीं । बातों, बातों से ज्ञान बनने वाला तो नहीं ।

बातों, बातों से हम त्यागी तो नहीं । बातों, बातों से हम ज्ञानी तो नहीं बातों, बातों से हम भक्त तो नहीं हो जाते ।

जब ये भावना जगेगी तो भावना के साँचे में जब हमारा जीवन ढलेगा, तब तो, साहब कहते हैं –

"साजन आओ बसो मेरे नैन में, पलक ढाक तोय लेऊ ।
ना मैं देखु और को, ना तोय देखन देऊ ।।"

साजन मेरे आओ और मेरे नैनों में बस जाओ, ना मैं किसी को देखना भी चाहता हूँ । ना मैं ये चाहता हूँ कि, तुम किसी औरको देखो, तो भक्त की ये भावना होती है ।

"नैनो की कर पुतली, पुतली पलंग बिछाय ।
और पलकन की चिक डारी के, पिय को लिए छिपाय ।।"

तो जब ये भावना हो, तब तोभक्ति आगे बढ़ती है, तो धनी धर्मदास जी साहब यही कहते हैं कि भाई, जब तक इस शरीर में प्राण है, तब तक मैं आपको बिसरने वाला नही हूँ । और भी आगे कहते हैं, भाई ज्यादा देर तो नहीं हो रही, और आगे धर्मदास जी साहब कहते हैं कि, इस गाँव में कोई अपना नहीं, ना कोई बाट है, ना बटुही है, कोई अपना नहीं, इस संसार में कौन अपना है, कोई भी नहीं है अपना, इस संसार में तो केवल साहब का नाम ही साथ जायेगा साहब कबीर कहते हैं ।

"हरि बिन तेरो मेरे मनवा, अपना केई नहीं ।"

इस संसार में कौन अपना है कोई अपना नहीं, केवल एक ईश्वर का भजन, केवल ईश्वर का स्मरण ही तो साथ जायेगा, और कौन साथ जायेगा, और कोई तो साथ जायेगा नहीं । साहब कहते हैं–

"एक दिन ऐसा होएगा, कोई काहु की नाहि ।
अरे ! घर की नारी को कहै, तन की तारी नाहि ।।"

एक दिन ऐसा होता है कि हमारे साथ में कोई जाता नहीं है अरे ! घर की नारी को कहे, घर की स्त्री क्या जायेगी, तन की नारी नाँही, हमारे तन की नारी, तन की नारी जानते हो ना, वैद्य लोग देखते हैं,, तो हमारा जब शरीर ही साथ नहीं जाता तो घर की नारी क्या

साथ जायेगी । देखा आपने लोग तो है यही तक दरवाजे तक

"लोग तो है मरघट के साथी और हंस अकेला जाहिरे"

तो जो लोग है वो साथ जाने वाले नहीं, साथ तो जायेगा केवल एक स्मरण, साहब का जो स्मरण है, प्रभु का जो स्मरण है वो ही साथ जायेगा । और स्मरण होगा कब, कब होगा स्मरण ? जब आप जागेंगे तब । सोयें रहेंगे तो कभी स्मरण नहीं होगा । स्मरण का मतलब है कि उसे याद करते रहो, हर क्षण, हर पल, स्मरण का एक बहुत गहरा असर होता है, स्मरण का अर्थ होता है जब आप वर्तमान में रहेंगे, तभी आप स्मरण कर पायेंगे, भूत में नहीं, ना भविष्य में नहीं, इसलिये साहब कबीर ने कहा –

"भूत भविष्य तुम देहु भगाई"

भूत को भी भगा दो और भविष्य को भी तुम छोड़ दो । और देखेंगे आप, एक बात देखेंगे आप कि हमारा जो जीवन है, हम जीते हैं, तो हमेशा या तो भूत पर अवस्थित होते हैं या भविष्य पर अवस्थित होते है । भूत पर जीते है या भविष्य पर जीते हैं, तो वर्तमान पर कभी नहीं जीते, लेकिन जिस घड़ी भी हम भूत को छोड़ दें, और भविष्य को भी छोड़ दें, केवल वर्तमान में ही जीवन जीने लगे । वही जीवन में हम साहब का स्मरण कर पायेंगे । दूसरा नहीं कर पायेंगे, इसका मतलब यह होता है कि हमारे अन्दर ना कोई चिन्ता रहे, ना चाह रहे

"चाह गयी चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह ।
जिनको कुछ ना चाहिये, वे शाहन के शाह ।।"

जिनमें कोई इच्छा नहीं होती, चाह नहीं होती, चाहे किसी को भी चाह हो, धन चाहते हैं तो चाहते ही हैं आप धर्म चाहते हैं तो चाहते ही हैं, नारी चाहते हैं तो चाहते ही हैं । आप यश वर्ग चाहते हैं तो चाहते ही हैं आप, सम्पत्ति चाहते हैं तो चाहते ही हैं । आप

मुक्ति चाहते हैं तो चाहते ही हैं आप । चाह तो करिये ना मुक्ति की चाह । चाह तो है धर्म की चाह, चाह तो है नारी की चाह । चाह तो है, चाह है आपके अन्दर, बनी तो है । प्रश्न यह नहीं कि किसकी चाह है । चाह है तो आपके अन्दर, इच्छा है तो अन्दर आकांक्षा है तो आपके अन्दर, इच्छा है तो अन्दर की आकांक्षा है तो आपके अन्दर । जब आकांक्षा ना हो, ना धर्म की आकांक्षा हो, और ना सचमुच कोई आकांक्षा हो, ना वैकुंठ की आकांक्षा हो, और ना सचमुच कोई आकांक्षा ही ना हो, जब कोई आकांक्षा नहीं होगी, तब आपको प्राप्ति होगी । तब तक तो आप बंधे हुये होंगे, तब तक आपको कुछ भी नहीं मिल पायेगा, और तब तक आप बँधें हुये होंगे । जब तक आपके जीवन में आकांक्षा होगी, तब तक आप साहब का स्मरण भी नहीं कर पायेंगे । तब तो आप साहब का नाम भी नहीं ले पायेंगें । इसलिये सबसे अच्छा तरीका है कि आप साहब का नाम लो, स्मरण लो, और जीवन में एक तारी लग जाये ।

आपके उठते, बैठते सब जगह देखेंगे आप अभी तो अनुभव नहीं है । जिस दिन आपको अनुभव हो जायेगा, उस दिन आप समझ जायेंगे कि ये ज्ञान है क्या चीज, यदि आप थोड़ा सा अभ्यास करो, यदि आप पाँच मिनट, दस मिनट बैठ जाओ, और अपने गुरू के लिये या अपने अन्दर ध्यान लगा के बैठो, तो आप देखेंगे, आपके अन्दर एक प्रकाश उत्पन्न होगा । एक ध्वनि उत्पन्न होगी । एक लौ लगेगी, एक शब्द उच्चारण होगा, और जब आप इस प्रकार से अभ्यास करते रहेंगे, ध्यान करते रहेंगे और ध्यान की गहराई में डूब जायेंगे, तो फिर समाज में परणित हो जायेगा, सारा जीवन आपका, उस प्रकाश से ओत-प्रोत हो जायेगा और आपके अन्दर एक जो स्मरण हैं, वो सतत् चलता रहेगा । उसी सतत् स्मरण को हम अजपा जाप करते हैं । जो आपके बिना हो उसको हम अजपा जाप कहते हैं । आप जाप करते हैं ? जैसे माला ले लेते हैं, और घर में बैठ के जो जाप करते हैं, उस जाप से कुछ होना नहीं है, हमेशा । तो जिस पूनों को आप जागृत

होते हैं, या जागरण करके बिताते हैं, वो जागरण स्मरण का जागरण है, सिनेमा देखने का जागरण नहीं है, आप सिनेमा मत देखेंगे आप । जागना हो तो साहब का नाम लेके जागे आप, सतत् आपका जीवन उनके स्मरण से भर जाये । और उपवास करे तो सारी इन्द्रियों का उपवास करें, कोई भोजन के उपवास से पूनों का व्रत सफल नहीं होगा । सारी इन्द्रियों का, उपवास करे, तो आप इसका समझ लें आप । ये बहुत महत्वपूर्ण तथ्य है । पूनों का उपवास और पूनों का जागरण ये जीवन का जागरण है, कोई रात का जागरण नहीं, और एक दिन का जागरण, नहीं ? आप सोचते होंगे भाई पूनों को ही जागरण क्यों दूसरे दिन नहीं । तो एक दिन जाग गये ना आप, तो दूसरे दिन भी आप जाग पायेंगे आप, समझे मेरी बात को आप कि नहीं ? आपका जीवन है, आज जो है वही कल होगा । यदि आज आप सत्तलोक में है, तो कल भी आप सत्तलोक में होंगे । आप यदि आज आप नर्क में हैं, तो ऐसा नहीं होगा कि कल आप सत्तलोक में चले जायेंगे । आज जो है, आज से कल का जन्म होगा । आज जो हैआप कल जो में प्रविष्ट करेंगे । आज यदि आप सत्तलोक में होगे आप । आज यदि आप नर्क में हैं, तो कल भी आप नर्क में होंगे । वो धारा बनी रहेगी इसलिये यदि आपको जागृत होना है, व्रत करना है, उपवास करना है, जिस स्थिति में आज होंगे ना,वही स्थिति तो आपको कल जन्म देगी । तो आज जो कुछ भी बनना है, वो आज ही बन जाओ । इसलिये साहब कबीर ने कहा नहीं, जो कल करना था, वो आज कर डालो और जो आज करना है,वो अब करो । अभी कर डालो,, मतलब यह कि आज हो, अभी ही, तभी तो आज बनोगे। जो आज है वही तो क बनोगे आप । आज हो तो बनते जाओगे क । इसलिये आज जो कुछ भी बनना है, आज बनो और इसी पल बनो । तब तो आपके जीवन की धारा बनती चली जायेगी और नहीं बन पाये तब तो नहीं होगा ना । एकाएक सत्तलोक में कुद तो नहीं जाओगे आप । आपकी जीवन धारा जब बहती चली जायेगी, आप बदलते चले जायेंगे तब तो आप सत्तलोक में प्रविष्ट कर पायेंगे, और आप जहाँ होंगे वही तो

सत्तलोक होगा । एक छोटी सी कहानी सुनाऊँ, फिर मैं बन्द कर दूँगा ।

एक कहानी सुनाऊँ क्या हुआ एक आदमी था । आदमी एक आदमी जैसे आपके यहाँ है नहीं छपरौली में, रेलवे स्टेशन है कि नहीं ? नहीं है ।आप नहीं जा सकते कही । तो एक व्यक्ति गया रेलवे स्टेशन में । वो सोचा कि भाई मैं चलूँ कहीं भी तोजाना था उसको, तो रेलवे स्टेशन पहुँच गया वह तो एक गाड़ी आ गयी, धक धकाधक जैसे ट्रेन आती है ट्रेन आ गयी तो उसमें लिखा था कि भाई स्वर्ग व्यक्ति ने सोचा कि भाई गाड़ी तो स्वर्ग जा रही है, अच्छा है, मैं बैठ जाऊ तो स्वर्ग पहुँच जाऊँगा, व्यक्ति बैठ गया गाड़ी में ट्रेन में । अब गाडी पहुँच गयी स्वर्ग में । तो व्यक्ति उतर गया । जब व्यक्ति उतर गया तो देखता क्या है ये चारों तरफ खुब शोर गुल मच रहा है, कोलाहल हो रहा है । व्यक्ति ने सोचा कि मैंने तो अधूरी बात सुनी थी । स्वर्ग में बड़ी शान्ति है, बड़ा आनन्द है, बड़ी उत्तम स्थिति है, और मैं ये स्वर्ग में आकर देखता हूँ , बड़ा कोलाहल है, बड़ा शोरगुल है, व्यक्ति पूछता है कि भाई यह स्वर्ग तो हैना । उसको कन्फर्म हुआ कि यह स्वर्ग है कि नहीं है । उसने कहा हाँ भाई स्वर्ग तो है, तुम स्वर्ग में हो तो । तो व्यक्ति ने सोचा कि मैं दूसरी जगह आ गया । अब चले दूसरी जगह चलूँ । इतने में आ गयी एक दूसरी ट्रेन उसमें लिखा था नर्क । तो व्यक्ति बैठ गया की गाड़ी में और चला, तो गाड़ी पहुँच गयी नर्क में तो व्यक्ति उतर गया जब व्यक्ति नर्क में उतरा तो देखता क्या है, कि बिल्कुल शान्त है, यहाँ तक कि पशु भी शान्त पक्षी भी शान्त, वृक्ष भी शान्त सब कुछ भी शान्त था । व्यक्ति ने सोचा कि ये हो क्या गया ? ये जहाँ मैं नर्क में सुनता था कि बड़ा शोरगुल होता है व्यक्ति को जलाया जाता है, कढ़ाई में औटाया जाता है,और ये करा जाता है बड़ा उपद्रव होता है शोरगुल होता है, बड़ा हंगामा होता है, लेकिन ये नर्क में तो बड़ा शान्त है ये बात क्या हो गई घटना क्या हो गई तो हुआ क्या था ? एक घटना

जरूर घटी थी । जितने भी महापुरुष थे । जैसे कि बुद्ध है, साहेब कबीर है, महावीर है, ईसा है इन लोगों ने सोचा कि भई एक बात करें हमें तो स्वर्ग में रहते, सत्यलोक में रहते बहुत दिन हो गये तो आज हम नर्क में चले ना । तो बड़े लोग नर्क में पहुँच गये थे । तो ये जितने भी महापुरुष थे सब नर्क में पहुँच गये इसलिये नर्क स्वर्ग बन गया था और जितने ये हिटलर है, सिकन्दर है जितने उपद्रवी लोग है, उन्होंने सोचा कि भई हमको तो जीवन पर्यन्त हो गया, नर्क में जीवन बिताते हम थोड़ा सा स्वर्ग में तो चलें तो वे स्वर्ग में पहुँच गये थे, इसलिए वहाँ हंगामा हो रहा था । मारपीट हो रही थी, सब कुछ हो रहा था । तो भई असली में स्वर्ग, स्वर्ग नहीं होता, नर्क नहीं होता । तुम अपने स्वर्ग और नर्क को अपने साथ लेकर चलते हो । स्वर्ग, नर्क तुम्हारे साथ-साथ चलते हैं । यह तो कहीं होता नहीं । तुम जहाँ जाओगे वहाँ स्वर्ग बनेगा तुम जहाँ जाओगे वहाँ नर्क बनेगा । तो ये स्वर्ग और नर्क बना है । तुम्हारी जवाबदारी के । तुम अपने जीवन में स्वर्ग को ढाल लो तो जहाँ जाओगे स्वर्ग होगा यदि तुम्हारा अपने जीवन को नर्क में डालो तो तुम जहाँ जाओगे नर्क ही होगा तो मैं भी तो यही प्रार्थना करत हूँ और निवेदन करता हूँ । ❀

साहेब बन्दगी ।